SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110085

Post-Event Report

Event	त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला
Topic	नामवर सिंह का आलोचना संसार
Organizer	मंथन एवं आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ
Date	9-11 फरवरी 2021
Time	प्रतिदिन 12:30 से अंत तक
Duration	कुल 15 घंटे
Place/Platform	ज़ूम
Number of Participants	74
Guest Speaker/Trainer	9
Welcome Speech	प्रथम एवं अंतिम दिवस - डॉ. अंजु द्वितीय दिवस - महेन्द्र प्रताप सिंह
Introduction to the Speaker	हिमांशु एवं कीर्ति (छात्र)

Activities

प्रतिदिन 2 सत्र
(प्रथम दिवस)
उद्घाटन सत्र - बीज वक्तव्य (वक्ता - श्री अशोक वाजपेयी)
प्रथम सत्र - विषय - मार्क्सवाद, आलोचना और नामवर सिंह (वक्ता - श्री मदन कश्यप, डॉ. मुरलीमनोहर प्रसाद सिंह)

(द्वितीय दिवस)
द्वितीय सत्र - विषय - नामवर और काव्य-आलोचना के प्रतिमान (वक्ता - प्रो. गोपेश्वर सिंह. प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी)
तृतीय सत्र - विषय - कथा समीक्षा का उत्कर्ष और नामवर (वक्ता - प्रो. चौथीराम यादव)

(तृतीय दिवस)
चतुर्थ सत्र - विषय - संपादन के निकष और नामवर सिंह (वक्ता - प्रो. अपूर्वानंद, प्रो. संजीव कुमार)
समापन सत्र - विषय - आलोचना की वाचिक परंपरा के नामवर (वक्ता - प्रो. निर्मला जैन)

SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110085

शोध-पत्र प्रस्तुतिकरण

प्रतिदिन मंच संचालन - हिमांशु एवं कीर्ति (छात्र)

स्वागत वक्तव्य - प्रथम एवं अंतिम दिवस - डॉ. अंजु

द्वितीय दिवस - महेन्द्र प्रताप सिंह

वक्ताओं के वक्तव्य

सवाल-जवाब

धन्यवाद ज्ञापन - प्रथम दिवस - डॉ. रेनू दुग्गल

द्वितीय दिवस - डॉ. अमरजीत कौर

तृतीय दिवस - डॉ. दीपमाला

Main Ideas

अपने बीज-वक्तव्य में श्री अशोक वाजपेयी ने कार्यशाला के विषय एवं प्रसिद्ध आलोचक डॉ. नामवर सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विचार प्रकट किए। नामवर जी वादविवाद और - यह बात पहली ,संवाद प्रिय व्यक्ति थे। आलोचक साहित्य की केन्द्रीय भूमि में सक्रिय है बार नामवर सिंह के कारण ही संभव हुई। उन्होंने कहा कि नामवर जी ने रामस्वरूप चतुर्वेदी , विजयदेव नारायण साही और देवीशंकर अवस्थी आदि के साथ मिलकर आलोचना को समकालीन रचना का समवर्ती और सहचर बनाया।

प्रथम सत्र में कवि मदन कश्यप ने अपने विचार रखते हुए कहा कि नामवर जी उन अर्थों में मार्क्सवादी आलोचक नहीं हैजिन अर्थों में रामविलास शर्मा हैं या शिवदान सिंह चौहान हैं। , जबकि नामवर सिंह का स्वर संवादी था। ,रामविलास शर्मा के यहाँ प्रतिवाद का स्वर गहरा है वे संवाद में विश्वास करते थे।

प्रथम सत्र के दूसरे वक्ता के रूप में प्रो. मुरली मनोहर प्रसाद सिंह ने मार्क्सवाद के मूल सिद्धांतों को समझाया और नामवर सिंह जी के कार्यों और उनसे जुड़े साहित्य के इतिहास का सामने रखा।

द्वितीय सत्र में प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी ने कहा कि भाषा, समाज और संस्कृति के क्षेत्र में नामवर सिंह ने दूसरी परंपरा की खोज की, जिसे लोग हमेशा याद करते हैं। उन्होंने कहा कि हिंदी साहित्य के निर्माण में अपभ्रंश और प्रतिरोध की संस्कृति की क्या भूमिका है इसकी खोज भी नामवर जी ने ही की थी। दूसरी परंपरा की खोज साहित्य की ओर से संस्कृति की एक धारा की खोज है। कविता के नए प्रतिमान' नामक पुस्तक को प्रो तिवारी ने सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में नामवर सिंह ने कविता के जिन नए प्रतिमानों को रेखांकित किया है उनकी दृष्टि में वे यथार्थवादी

कविता के प्रतिमान हैं. इस पुस्तक की की चर्चा करते हुए वे कहते हैं कि कविता के नए प्रतिमान के केन्द्र में मुक्तिबोध हैं ... इस पुस्तक का आधार यह धारणा है कि नयी कविता में मुक्तिबोध की स्थिति वही है जो छायावाद में निराला की थी. नामवर सिंह के काव्यालोचना पर चर्चा करते हुए इस पुस्तक पर उन्होंने विस्तृत वक्तव्य दिया। प्रो तिवारी ने काव्य के प्रतिमानों को रेखांकित करते हुए कहा कि नामवर सिंह ने अपनी इस पुस्तक में काव्य- भाषा की विशिष्टता, काव्य- बिम्ब और सपाटबयानी, नाटकीय काव्य- संरचना, विसंगति और विडंबना, अनुभूति की जटिलता और तनाव तथा ईमानदारी और प्रामाणिक अनुभूति को कविता के नए प्रतिमान माना है. यह प्रतिमान कविता के लिए नए मानक साबित हुए।

नामवर सिंह के व्यक्तित्व और आलोचना कर्म पर अपना वक्तव्य देते हुए प्रोफेसर गोपेश्वर सिंह ने कहा कि नामवर सिंह साहित्य के सेलिब्रिटी आलोचक हैं। अज्ञेय के बाद हिंदी संसार की हलचलों के केंद्र में नामवर सिंह ने अपनी जगह बनाई. यह पहली बार हुआ कि हिंदी का कोई आलोचक साहित्य का केन्द्रीय व्यक्तित्व बना। उन्होंने इस बात पर ज़ोर देते हुए कहा कि नामवर सिंह ने अपने लिखे से हिंदी भाषी जनता को जितना शिक्षित किया उससे अधिक अपने व्याख्यानों के जरिए उन्होंने यह काम किया । व्याख्यानों की संख्या बढ़ती जा रही थी जिसे देखते हुए विरोधियों ने व्यंग्य में उन्हें 'वाचिक परंपरा का आलोचक' कहना शुरू किया. ऐसा कहने वालों की मंशा यह होती थी कि नामवर सिंह लिखते नहीं,सिर्फ बोलते हैं. लेकिन आगे चलकर प्रशंसक ही नहीं,विरोधी भी यह महसूस करने लगे कि व्याख्यान भी जनता के बौद्धिक शिक्षण का एक माध्यम है। प्रो.सिंह ने नामवर जी की कृतियों को याद करते हुए कहा कि 'छायावाद' तथा 'इतिहास और आलोचना' से नामवर सिंह के आलोचक व्यक्तित्व की पहचान बनी वहीं 'कहानी: नई कहानी' और 'कविता के नए प्रतिमान' के जरिए वे आलोचक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। 'दूसरी परंपरा की खोज' से वे हिंदी आलोचना की बहस के केंद्र में वर्षों तक बने रहे. 'वाद-विवाद-संवाद' के जरिए उन्होंने अपने विवादप्रिय आलोचक व्यक्तित्व को बनाए रखा. 'आलोचना' पत्रिका का कई दशकों तक उन्होंने संपादन किया और नई आलोचनात्मक समझ का विकास किया. इन सब कामों के जरिये हिंदी आलोचना को भारतीय सन्दर्भों के साथ वैश्विक साहित्यिक समझ से जोड़ने और नई पीढ़ी के आलोचकों के बौद्धिक क्षितिज का विस्तार करने में नामवर सिंह का ऐतिहासिक योगदान है.

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए प्रो चौथी राम यादव ने कहा कि डॉ. नामवर सिंह का नाम हिन्दी साहित्य में एक नई विमर्श का नाम है। उन्होंने साहित्य जगत को आलोचना और संस्कृति के प्रति नए विमर्श दिए। उन्होंने आलोचना के माध्यम से सामाजिक सरोकार को पूर्ण करने का प्रयास अपनी लेखनी के माध्यम से किया। उनकी कृति और लेख समसामयिक वैचारिकी और साहित्य को उन्नत करने वाली है। उनकी आलोचना को समझने

के लिए सभी साहित्य को जानने और समझने वाले लोगों को पढ़ना जरूरी है।

कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि 60 सालों से प्रमुख आलोचकों की श्रेणी में नामवर सिंह का नाम इसलिए शामिल है, क्योंकि उन्होंने साहित्य जगत को नए लेखक और साहित्यकारों को एक नई संस्कृति दी। उनकी आलोचना धर्मिता समसामयिक थी, हजारी प्रसाद द्विवेदी की परंपरा को उन्होंने विकसित किया। ये भारतीय संस्कृति को हिन्दी संस्कृति की ओर ले आने वाले आलोचक हैं। उनकी आलोचना क्षेत्र का विस्तार आदिकालीन साहित्य से होते हुए मध्यकालीन और आधुनिक साहित्य तक है। जिसमे स्वातंत्र्योत्तर कथा समीक्षा सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। कथा विधा को समझने के लिए नामवर सिंह ने नए मानकों को स्थापित किया है।

प्रो. संजीव कुमार जोकि तमाम उपलब्धि और सम्मान के साथ 1997 से शिक्षण कार्य कर रहे हैं. प्रथम वक्ता के रूप में नामवर सिंह और हिंदी साहित्य की पत्र-पत्रिकाओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए.

कार्यक्रम में मौजूद द्वितीय वक्ता प्रो. अपूर्वानंद जी ने नामवर सिंह के विभिन्न लेखों, व्याख्यान की दूरदृष्टिता का वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य में विस्तार पूर्वक बखूबी वर्णन किया. उन्होंने बताया कि नामवर सिंह अपनी युवावस्था से ही काफी अच्छे आलोचक रहे हैं. इस बात अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वे उस समय के स्थापित आलोचकों की भी आलोचना करने से भी पीछे नहीं हटे. वह काफी गहन अध्ययनशील व दूरदृष्टि के व्यक्ति रहे. साथ ही वे हमेशा नयेपन को लेकर काफी उत्सुक रहते थे. वह साहित्य में नयापन चाहते थे उन्होंने कहा कि मैं हिंदी साहित्य में कविता लेखन के लिए आया था मगर जब इसमें इतनी गंदगी देखी तो मैंने झाड़ू उठा ली और यह झाड़ू अभी तक नहीं छुटी. वह कहते हैं कि संपादक का एक मात्र मुख्य कार्य सफाई करना है ताकि समाज में भाषा का पैनापन बना रहे और शुद्ध भाषा का प्रचार हो. साहित्य भाषा तभी कामयाब होगी जब समाज विवेक संपन्न होगा. इसी के साथ उन्होंने जनतंत्र, समाज आदि पर भी काफी गंभीरता से अपने विचार रखें.

उन्होंने आने वाले हिंदी साहित्य के युवाओं को कहा है कि ऐसा ना लिखें जिससे फासीवादी व्यवस्था को मदद मिले. भाषा को धर्मनिरपेक्ष बनाएं. इसी वक्तव्य के साथ प्रो. अपूर्वानंद जी ने अपने व्याख्यान को समाप्त किया.

कार्यक्रम समापन के लिए प्रो. निर्मला जैन ने मंच संभाला और श्रोताओं के सवाल का जबाब दिया. साथ ही नामवर सिंह के शुरुआती जीवन व उनकी शिक्षा-दीक्षा, विचार आदि पर अपने अनुभव को साझा किया.

SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110085

Vote of thanks	प्रथम दिवस - डॉ. रेनू दुग्गल द्वितीय दिवस - डॉ. अमरजीत कौर तृतीय दिवस - डॉ. दीपमाला

SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110085

Poster (Attach below)

कार्यशाला के विषय में

अपने दैनिक जीवन में किसी न किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना पर टिप्पणी करना, उसकी समीक्षा या आलोचना करना मनुष्य की सहज प्रवृत्ति में शामिल एक तत्त्व है। परंतु अलग-अलग धारणाओं, चिंतन क्षमता और संस्कारों के कारण इसमें एकरूपता बहुत कम या न के बराबर होती है। साहित्य-आलोचना भी इसी प्रकार की विभिन्न चिंतन क्षमताओं, धारणाओं और साहित्यिक संस्कारों से उत्पन्न होकर प्रतिफलित होती है। आरंभ से ही साहित्य लेखन के समानांतर आलोचना ने भी अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान बनाया है। हिंदी आलोचना ने हिंदी भाषा और साहित्य के साथ-साथ हिंदी समाज को भी गढ़ा है। अपनी इस यात्रा में अनेक पड़ावों को पार करते हुए आलोचना अब स्वतंत्र रचना का रूप ले चुकी है। रचना विशेष के गुण-दोष विवेचन से आगे बढ़कर आज हिंदी आलोचना रचना की विशेषताओं पर विचार करती है; उसकी उपलब्धियों का मूल्यांकन करती है; उसकी उपयोगिता के विषय में निर्णय देती है; रचनाओं को श्रेणीबद्ध करती है तथा इन सबसे आगे बढ़कर रचना को समझने में पाठक की मदद करती है।

इन विविध आयामों के अंतर्गत हिंदी आलोचना की एक सुदृढ़ परंपरा रही है तथा एक से बढ़कर एक आलोचकों ने हिंदी आलोचना को समृद्ध करने का कार्य किया। नामवर सिंह भी हिंदी आलोचना के एक ऐसे ही नाम हैं। अपने नाम के अनुरूप ही वे हिंदी साहित्य और आलोचना के 'नामवर' व्यक्तित्व थे, जिन्होंने हिंदी आलोचना के विकास को सुदृढ़ करने तथा उसे आगे बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। मार्क्सवाद और सौंदर्यशास्त्र में तारतम्य बनाते हुए हिंदी आलोचना को सुदृढ़ करने का कार्य नामवर सिंह ने किया। उन्होंने हिंदी आलोचना की 'एक नई परंपरा की खोज' की। आलोचना को वे 'वाद, विवाद और संवाद' की परंपरा का एक आयाम मानते थे। हिंदी आलोचना की वाचिक परंपरा में भी नामवर सिंह एक महत्त्वपूर्ण नाम के रूप में हमारे समक्ष उपस्थित दिखाई देते हैं। नामवर सिंह निरंतर गतिशील और विकासशील आलोचक थे। लंबी साहित्यिक आलोचना-यात्रा में वे लगातार आत्मालोचन-रत भी रहे और स्वयं का परिमार्जन करते रहे। उनकी आलोचना इतनी तीक्ष्ण, तार्किक, तथ्यपरक तथा बहुआयामी है कि एक ओर वह समकालीन संदर्भों में पूर्णतः प्रासंगिक है, वहीं उसकी पुनर्व्याख्या और पुनर्विश्लेषण की भी पर्याप्त संभावनाएँ हैं।

इस तीन-दिवसीय ऑनलाइन राष्ट्रीय कार्यशाला में हम अलग-अलग विद्वानों, विशेषज्ञों, प्राध्यापकों, शोधार्थियों एवं अकादमिक क्षेत्र से जुड़े लोगों के माध्यम से नामवर सिंह के आलोचना-कर्म की पुनर्व्याख्या और पुनर्विश्लेषण करेंगे और उनकी आलोचना प्रक्रिया को समझने का प्रयास करेंगे। साथ ही इस कार्यशाला के माध्यम से आलोचना की परंपरा, उसके उतार-चढ़ाव तथा उसके नए प्रतिमानों को समझने की कोशिश करेंगे।

कार्यशाला संबंधी निर्देश -

- आप सभी इस कार्यशाला में zoom माध्यम के जरिए जुड़ सकते हैं।
- शोध-आलेख प्रस्तुति के लिए प्रतिभागियों का चयन उनके द्वारा भेजे गए शोध-आलेखों की गुणवत्ता के आधार पर किया जाएगा।
- चयन हेतु शोध-आलेख 8 फरवरी, 2022 तक manthan@sgndkc.du.ac.in पर भेजे जा सकते हैं।
- शोध-आलेख कार्यशाला के विषय अथवा उपविषयों पर आधारित होने चाहिए।
- शोध-आलेख एमएस वर्ड फाइल एवं मंगल फॉंट में कम से कम 1000 शब्दों में लिखा होना चाहिए।
- शोध-आलेख पूर्णतः मौलिक एवं अप्रकाशित होना चाहिए। प्रतिभागी को शोध-आलेख के अप्रकाशित एवं मौलिक होने संबंधी स्वलिखित पत्र संलग्न करना होगा।
- शोध-आलेख प्रस्तुति हेतु चयनित प्रतिभागियों को 10 फरवरी, 2022 तक सूचित किया जाएगा।
- चयनित शोध-आलेख INTERNATIONAL PEER REVIEWED JOURNAL बोहल शोध मंजूषा (ISSN : 2395-7115, IMPACT FACTOR 5.6) में प्रकाशित किए जाएँगे।
- शोध-आलेख प्रस्तुति हेतु कोई शुल्क नहीं है, किन्तु शोध-आलेख प्रकाशित पुस्तक प्रस्तुतकर्ता को स्वयं क्रय करनी होगी।

डॉ. अंजु (8700424382)
शिवम् राजपूत (7838469141)
सुशील कुमार (8851839509)

नामवर सिंह का आलोचना संसार

प्रथम दिवस

उद्घाटन सत्र:
बीज-वक्तव्य
श्री अशोक वाजपेयी

प्रथम सत्र:
मार्क्सवाद, आलोचना और नामवर सिंह
वक्ता :-
श्री मदन कश्यप
डॉ. मुरलीमनोहर प्रसाद सिंह

द्वितीय दिवस

द्वितीय सत्र:
नामवर और काव्य-आलोचना के प्रतिमान
वक्ता:-
प्रो. गोपेश्वर सिंह
प्रो. बजरंग बिहारी तिवारी

तृतीय सत्र:
कथा-समीक्षा का उत्कर्ष और नामवर
वक्ता:-
प्रो. चौथी राम यादव
प्रो. नित्यानंद तिवारी

तृतीय दिवस

चतुर्थ सत्र:
सम्पादन के निकष और नामवर सिंह
वक्ता:-
प्रो. अपूर्वानंद
प्रो. संजीव कुमार

समापन सत्र:
आलोचना की वाचिक परंपरा के नामवर
वक्ता:-
प्रो. निर्मला जैन
प्रो. विश्वनाथ त्रिपाठी

SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110085

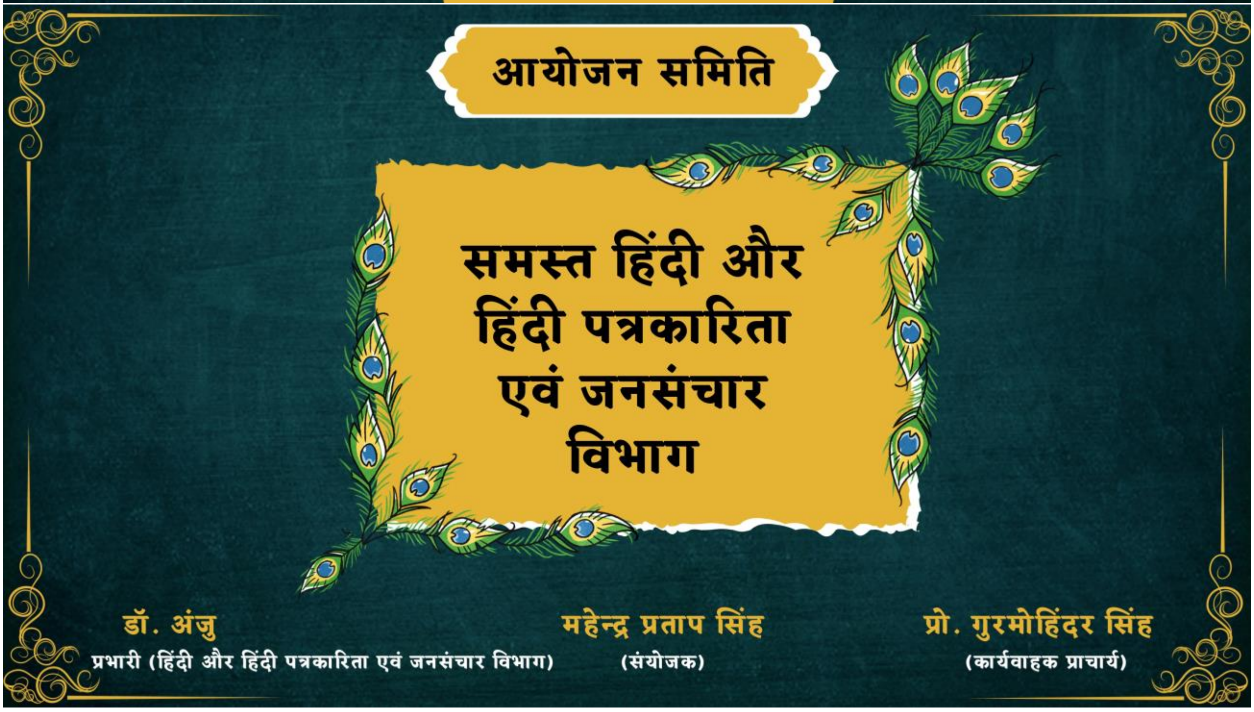

Pictures (Attach Five Photos)

manthan
MAHENDRA PRATAP S...
HIMANSHU SHARMA
Dr. Anju S
Sonu Kumar Jo...
Sonu Kumar Journalist
MADAN KASHYAP
LIVE
on Custom Live Streaming Service
Dr. Murlimanohor prasad singh
MADAN KASHYAP
Dr. Anju Bala
Avinash Kumar
Bhawna Awasthi
Aman panwar
Unmute
Stop Video
Security
61
Participants
Chat
Share Screen
Pause/Stop Recording
Breakout Rooms
Reactions
Leave

SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110085

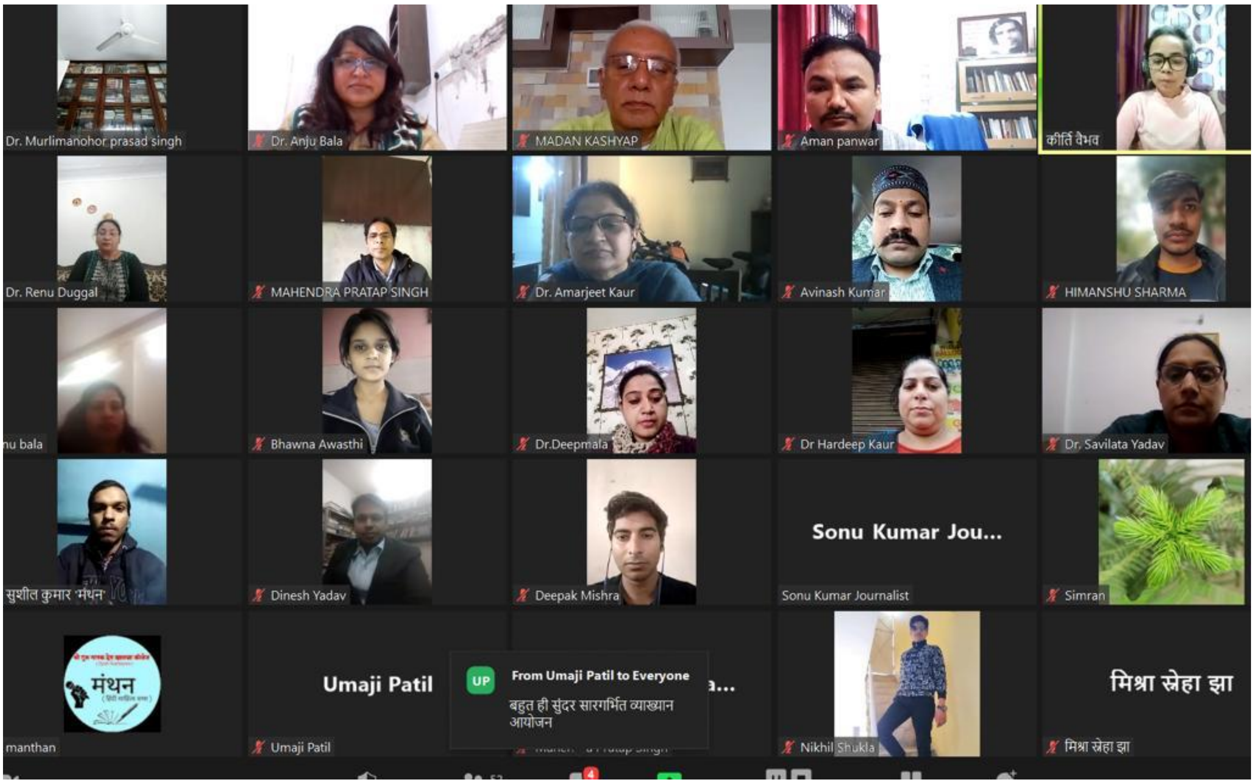

SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110085

SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110085

SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110085

SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110085

Attach Photocopy of two Certificates

श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

आंतरिक गुणवत्ता प्रमाणन प्रकोष्ठ और

'मंथन'

(हिंदी साहित्य सभा)

प्रमाण-पत्र

सत्र : 2021-22

प्रमाणित किया जाता है कि

सुशील कुमार, श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज

ने दिनांक 9-11 फरवरी, 2022 को हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग और आंतरिक गुणवत्ता प्रमाणन प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित "नामवर सिंह का आलोचना संसार" विषय पर त्रि-दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में सफलतापूर्वक भाग लिया।

डॉ. अंजु	महेन्द्र प्रताप सिंह	डॉ. विनयनीत कौर	प्रो. गुरमोहिंदर सिंह
(प्रभारी, हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग)	(संयोजक, मंथन)	(समन्वयक, आंतरिक गुणवत्ता प्रमाणन प्रकोष्ठ)	(कार्यवाहक प्राचार्य)

SRI GURU NANAK DEV KHALSA COLLEGE
Dev Nagar, Delhi - 110085

श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

आंतरिक गुणवत्ता प्रमाणन प्रकोष्ठ और

'मंथन'

(हिंदी साहित्य सभा)

प्रमाण-पत्र

सत्र : 2021-22

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती/ रेनू कुमारी ने श्री गुरु नानक देव खालसा कॉलेज में 9-11 फरवरी, 2022 को समायोजित "नामवर सिंह का आलोचना संसार" विषयक कार्यशाला में पत्र प्रस्तोता के रूप में "नामवर सिंह की आलोचनात्मक दृष्टि" विषय पर अपना शोध-प्रपत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. अंजु	महेन्द्र प्रताप सिंह	डॉ. विनयनीत कौर	प्रो. गुरमोहिंदर सिंह
(प्रभारी, हिंदी और हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग)	(संयोजक, मंथन)	(समन्वयक, आंतरिक गुणवत्ता प्रमाणन प्रकोष्ठ)	(कार्यवाहक प्राचार्य)

महेन्द्र प्रताप सिंह

संयोजक
मंथन (हिंदी साहित्य सभा)

डॉ. अंजु

विभाग प्रभारी
हिंदी एवं हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग